माड़ की लोककथा

पुनर्लेखन: प्रभात

चित्र: नीलेश गहलोत

चिड़िया की भाएली

एकलव्य

Big Little Book Award Winning Author

माड़ की लोककथा

राजस्थान के करौली ज़िले के गंगापुर, बामनवास और नादौती अंचल को माड़ का इलाका कहते हैं। यह काली मिट्टी के खेतों वाला सूखा इलाका है। तमाम भारतीय गाँवों की तरह इस इलाके में भी लोक साहित्य की समृद्ध परम्परा है। यहाँ लोककथाओं, लोकगाथाओं और पौराणिक कहानियों को दंगलों में गाकर सुनाया जाता है। लोककथाओं पर आधारित लोकगीतों के गायन की अनेक शैलियाँ भी यहाँ प्रचलित हैं, जिन्हें कन्हैया, पद, हेलाख्याल, सुड्डा आदि नामों से जाना जाता है।

माड़ की लोककथाओं में माड़ के पेड़ होते हैं। पेड़ों पर माड़ के पक्षी। सुदूर पानी भरने जातीं लहँगा-लगूड़िया पहने माड़ की औरतें और लड़कियाँ। काले खेतों में काम कर रहे माड़ के लोग और रात भर चलने वाली लम्बी आँधियाँ। माड़ की लोककथाओं में माड़ की धरती बोलती है।

माड़ की लोककथा

चिड़िया की भाएली

पुनर्लेखन: प्रभात

चित्र: नीलेश गहलोत

एकलव्य

कुकुरमुत्तों के जंगल में एक चिड़िया रहती थी। एक कम पत्तों वाले पेड़ पर उसका घर था। घर में वह सिर्फ रात में ही रहती थी। सुबह पेड़ की टहनियों पर फुदकती थी और पत्तों पर झूलती थी। दोपहर में खाने-पीने के लिए ज्वार-बाजरे के खेतों की ओर उड़ जाती थी। शाम को आकाश में घूमती थी।

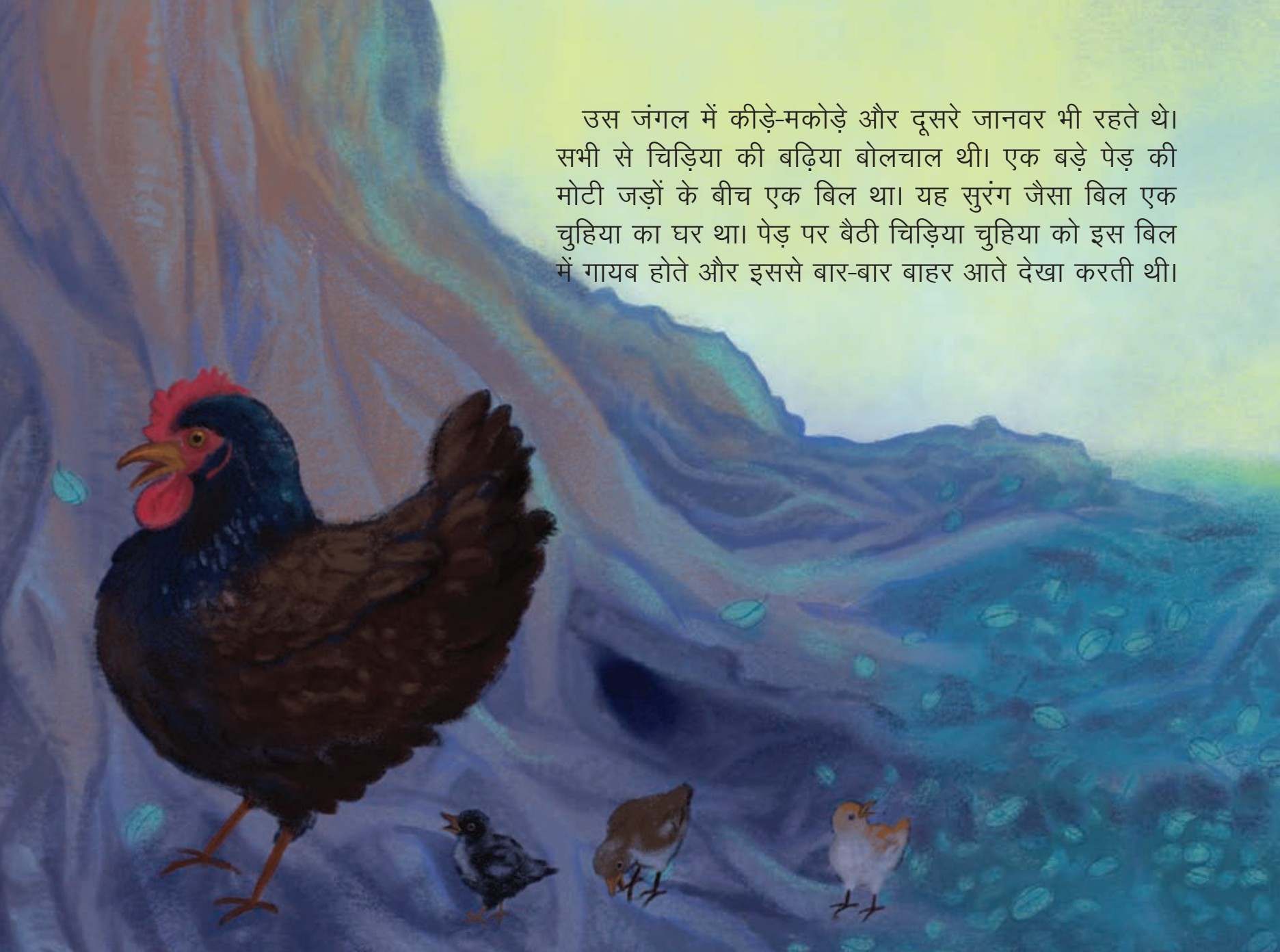

उस जंगल में कीड़े-मकोड़े और दूसरे जानवर भी रहते थे। सभी से चिड़िया की बढ़िया बोलचाल थी। एक बड़े पेड़ की मोटी जड़ों के बीच एक बिल था। यह सुरंग जैसा बिल एक चुहिया का घर था। पेड़ पर बैठी चिड़िया चुहिया को इस बिल में गायब होते और इससे बार-बार बाहर आते देखा करती थी।

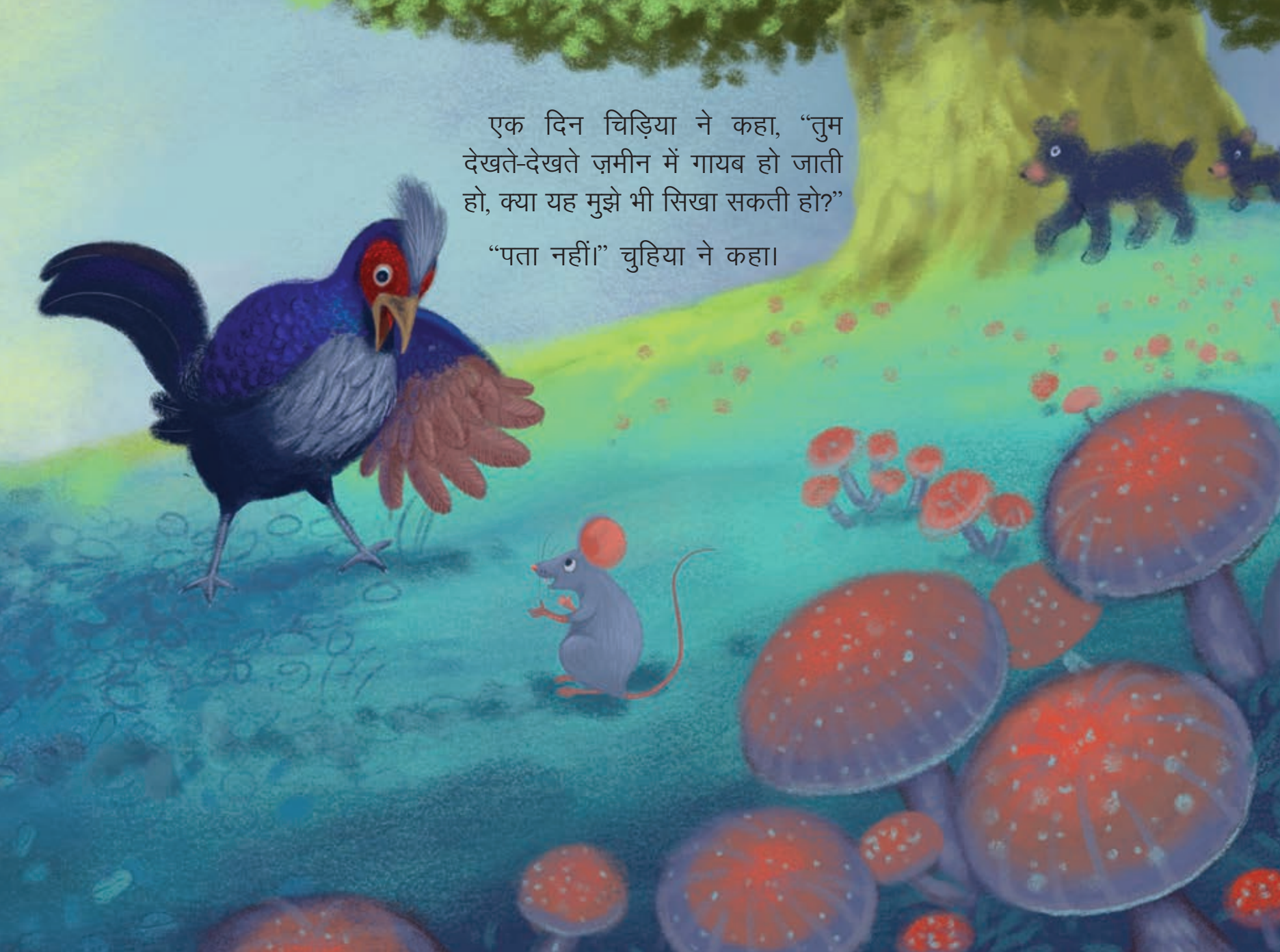

एक दिन चिड़िया ने कहा, “तुम देखते-देखते ज़मीन में गायब हो जाती हो, क्या यह मुझे भी सिखा सकती हो?”

“पता नहीं।” चुहिया ने कहा।

"क्या तुम्हारे इस बिल में उड़ने की जगह है?" चिड़िया ने एक और बात पूछी।

"उड़ने की नहीं, चलने-फिरने की है। तुम्हें सिर्फ चलना-फिरना हो तो बता देना।" चुहिया ने कहा।

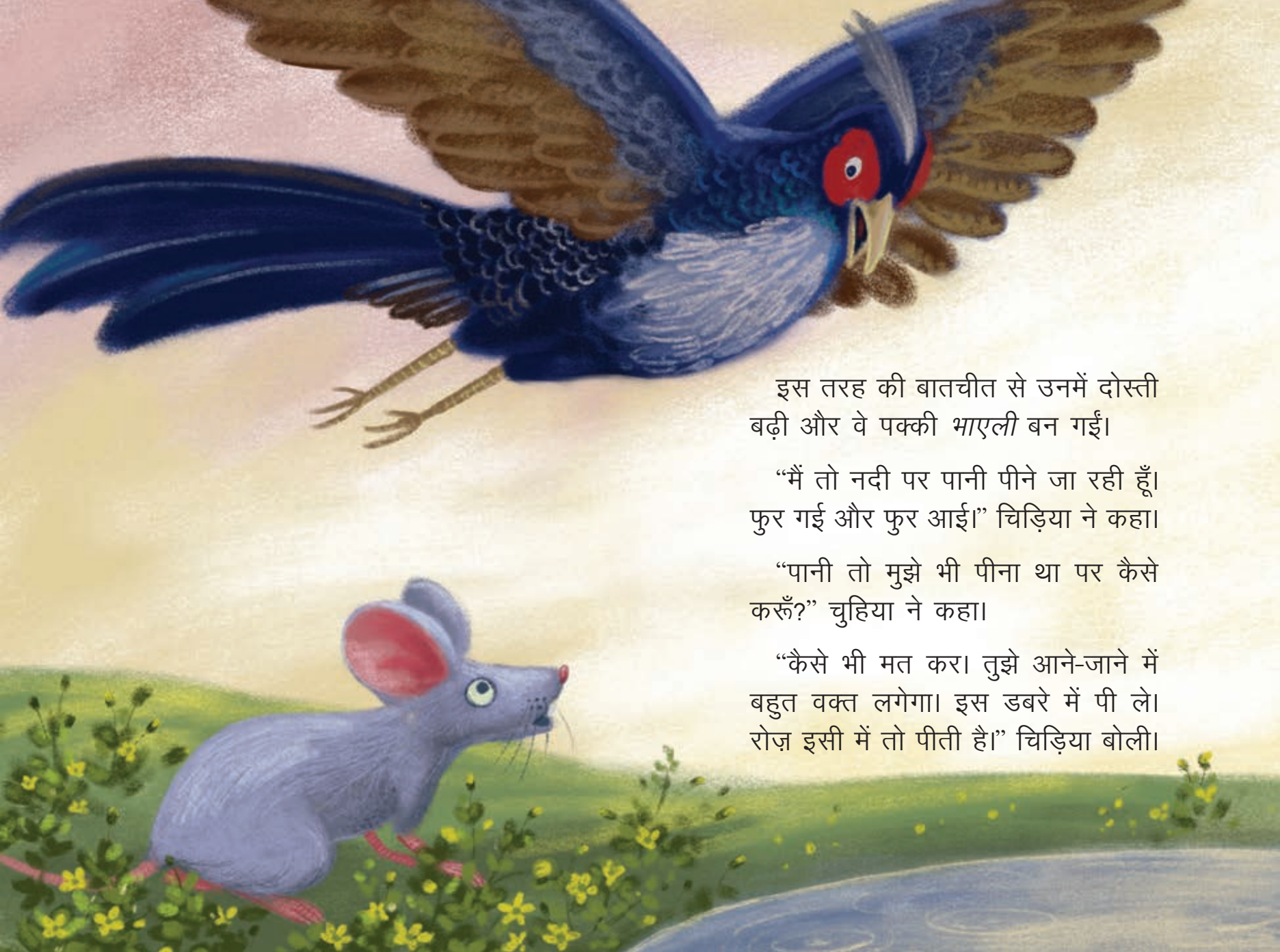

इस तरह की बातचीत से उनमें दोस्ती बढ़ी और वे पक्की *भाएली* बन गईं।

“मैं तो नदी पर पानी पीने जा रही हूँ। फुर गई और फुर आई।” चिड़िया ने कहा।

“पानी तो मुझे भी पीना था पर कैसे करूँ?” चुहिया ने कहा।

“कैसे भी मत कर। तुझे आने-जाने में बहुत वक्त लगेगा। इस डबरे में पी ले। रोज़ इसी में तो पीती है।” चिड़िया बोली।

"वो तो ठीक है...चलो, मैं चले ही चलती हूँ।" ऐसा कहते हुए चुहिया चिड़िया के साथ हो ली।

नदी पर चिड़िया ने तो पानी पी लिया। पर चुहिया पीने गई तो फिसल गई और नदी में बहने लगी। चिड़िया ने उसकी पूँछ को चोंच में दबाकर नदी में से उसे निकाला।

"मैं नहीं होती तो तू अभी मर जाती।" चिड़िया ने फटकार लगाई।

"क्यों मर जाती? वो तो मैं तैरने के लिए उधर चली गई थी। जल्दी ही वापस आ जाती। तू क्यों बीच में फुदकती हुई वहाँ आई?" चुहिया ने ऐसा जवाब दिया कि बेचारी चिड़िया का मुँह उतर गया।

"मैं तो हरे-भरे झाड़ों की *झिट्टियों* में लाल बेर खाने जा रही हूँ। फुर गई और फुर आई।" चिड़िया ने कहा।

"तो चलो ठीक है मैं भी साथ चलती हूँ।" ऐसा कहते हुए चुहिया भी साथ हो ली।

चिड़िया तो झाड़ों पर उड़-उड़कर चुन-चुनकर मीठे बेर खाने लगी। चुहिया ने एक झाड़ी में चढ़ने की कोशिश की तो उसका कान काँटों में उलझ गया।

चिड़िया ने देखा चुहिया झाड़ में अटक गई है और दर्द से चीख रही है। वह जल्दी से वहाँ आई और उसने चोंच से पकड़कर चुहिया के कान को काँटों से निकाला।

"मैं नहीं होती तो आज तो तू मर ही जाती। कुछ ही देर में कौए झपटकर ले जाते।" चिड़िया ने कहा।

"वो तो मैं खुद ही रुककर कान छिदवा रही थी, बाली पहनने के लिए। तू क्यों बीच में फुदकती हुई वहाँ आई। मैं तो आ ही रही थी।"

चुहिया ने ऐसा जवाब दिया कि बेचारी चिड़िया का मुँह उतर गया।

"अरे वो धूल भरी *गढ़ार* में कितनी सुन्दर गाड़ी चली जा रही है। मैं तो उस पर जाकर *मौजी* खाती हूँ। फुर गई और फुर आई।" चिड़िया ने कहा।

“तो फिर ठीक है मैं भी साथ चलती हूँ।” ऐसा कहते हुए चुहिया भी चिड़िया के साथ हो ली।

चिड़िया तो गाड़ी पर बैठकर हु*मचती* हुई मौजी खाने लगी। चुहिया ने चलती हुई गाड़ी पर चढ़ने की कोशिश की तो पहिए के नीचे दब गई।

चिड़िया ने देखा उसकी भाएली तो धूल में बेहोश पड़ी है। वह उड़ती हुई वहाँ आई। उसने चुहिया के शरीर को हिलाया। रास्ते के बगल में बह रही नहर से पानी लाकर छींटे दिए। धीरे-धीरे चुहिया को होश आया। होश आते ही वह उछलकर खड़ी हो गई।

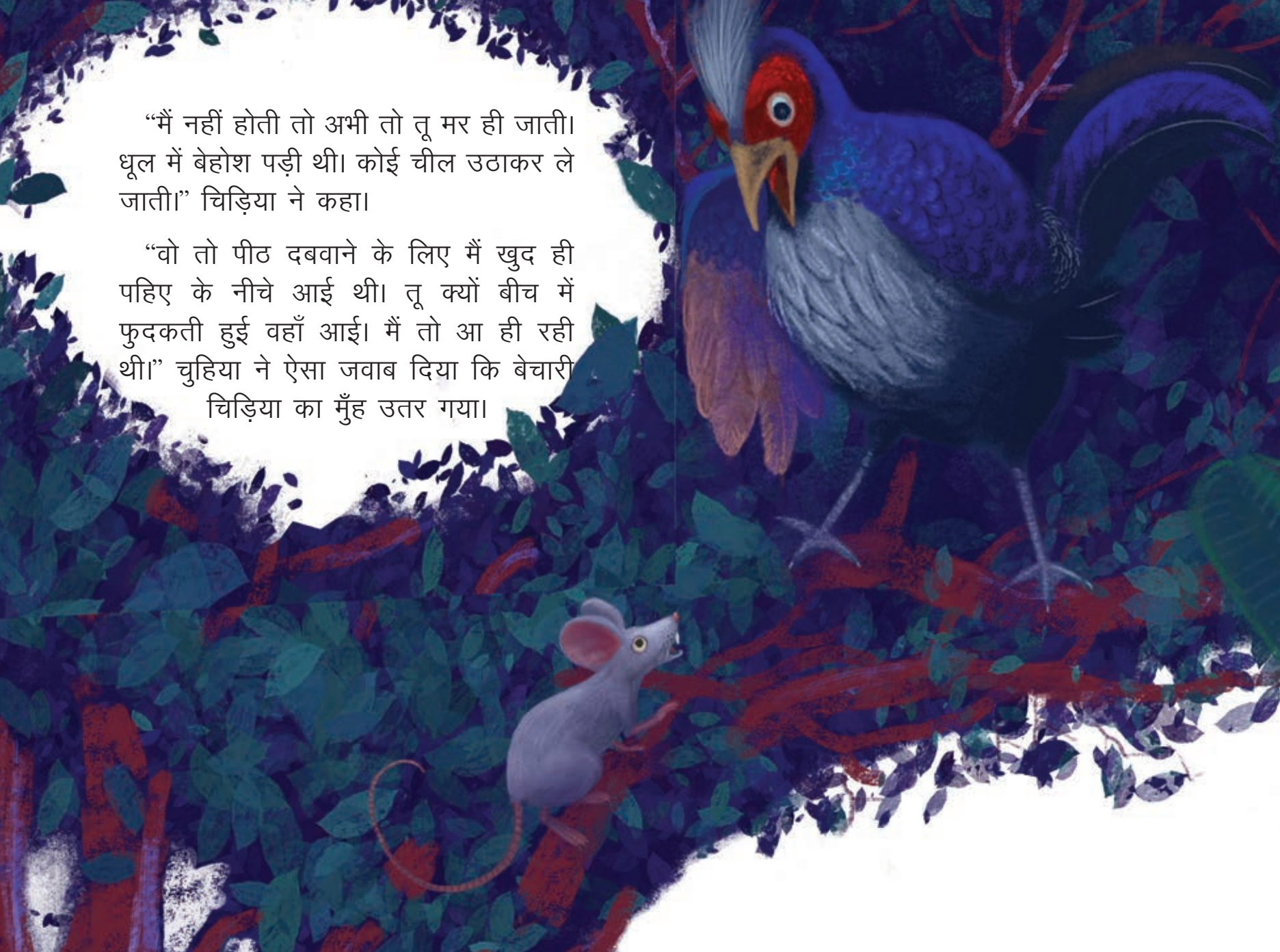

"मैं नहीं होती तो अभी तो तू मर ही जाती। धूल में बेहोश पड़ी थी। कोई चील उठाकर ले जाती।" चिड़िया ने कहा।

"वो तो पीठ दबवाने के लिए मैं खुद ही पहिए के नीचे आई थी। तू क्यों बीच में फुदकती हुई वहाँ आई। मैं तो आ ही रही थी।" चुहिया ने ऐसा जवाब दिया कि बेचारी चिड़िया का मुँह उतर गया।

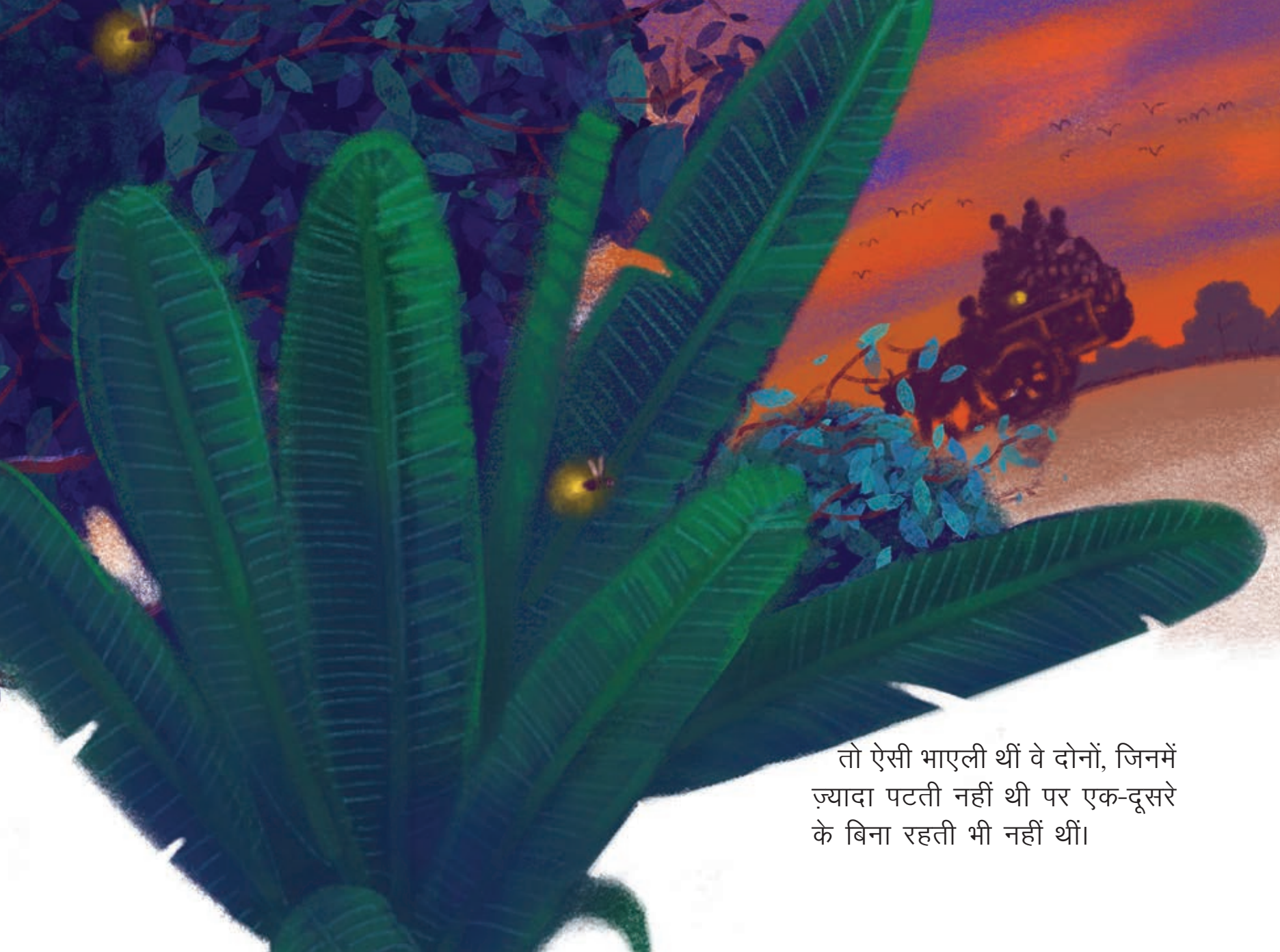

तो ऐसी भाएली थीं वे दोनों, जिनमें ज़्यादा पटती नहीं थी पर एक-दूसरे के बिना रहती भी नहीं थीं।

प्रभात बाल साहित्य की दुनिया के जाने-माने लेखक हैं। उन्होंने कई माड़ लोककथाओं को अपने शब्दों में पिरोया है। एकलव्य उनके द्वारा पुनर्लिखित पाँच माड़ लोककथाओं को प्रकाशित कर चुका है, *चिड़िया की भाएली*, इसी शृंखला में छठी किताब है। बाकी इस प्रकार हैं:

सियार और मोर

FCCI पब्लिशिंग अवार्ड 2020 के तहत स्पेशल जूरी अवार्ड से सम्मानित।

सियार और मोर की दोस्ती से शुरू हुई इस कहानी में बुढ़िया, बछड़ा, भालू...का सामना होता है सियार से। और फिर...दिन होता है, रात होती है, पर सियार की यह कहानी कभी खत्म नहीं होती है।

चित्र: मयूख घोष
मूल्य: 60.00
ISBN: 978-93-85236-80-8

कमेड़ी का गीत

कमेड़ी खाने की तलाश में रोज़ाना एक बाड़ी तक उड़कर जाती। खुद का भी पेट भरती और बच्चों के लिए चोंच में भरकर ले आती। मगर बाड़ी के माली से ये देखा न गया और उसने धोखे से उसे अपनी बाड़ी में बन्धक बना लिया। अब कमेड़ी अपने बच्चों तक कैसे पहुँचेगी...

चित्र: सुनीता
मूल्य: 50.00
ISBN: 978-93-85236-89-1

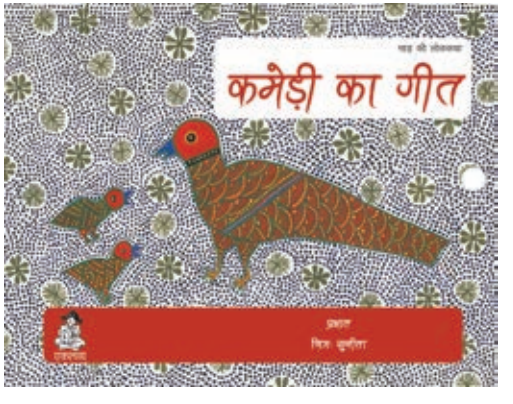

अण्डे से निकला बछेरा तो झोंपड़ी से टपका

आदमी घोड़े के अण्डों का व्यापार करना चाहता था पर बीच में टपक गया टपका। टपका कहाँ से और कैसे टपका? इस टपके के चक्कर में आदमी तो क्या शेर भी चकरा गया। और व्यापार का क्या हुआ?

चित्र: मयूख घोष
मूल्य: 50.00
ISBN: 978-93-85236-98-3

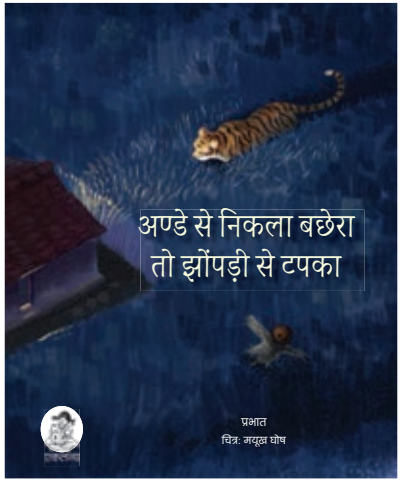

अच्छा मौसी अलविदा

भैंस के गोबर में फँसी एक चिड़िया एक बिल्ली से अपनी जान बचाती है। कैसे...

चित्र: सुनीता
मूल्य: 40.00
ISBN: 978-93-85236-25-9

सारस और सियार

सारस और सियार की दोस्ती बढ़ ज़रूर रही थी, पर दोनों का मिज़ाज काफी फर्क था। सियार को तो इस दोस्ती में मज़ा आ रहा था लेकिन सारस घुटन महसूस कर रहा था। क्या यह दोस्ती बनी रहेगी?

चित्र: मयूख घोष
मूल्य: 35.00
ISBN: 978-93-87926-19-6

जब-जब भी मैं ऐसे संकट में आया कि चुहिया की तरह मरने वाला था कि उन्होंने मुझे अपनी हर तरह की मदद से चिड़िया की तरह बचा लिया। ऐसे प्रिय दोस्त रविकांत तोषनीवाल को सादर समर्पित।

- प्रभात

चिड़िया की भाएली
CHIDIYA KI BHAYLI

कहानी: प्रभात
चित्र: नीलेश गहलोत
डिज़ाइन: कनक शशि
सम्पादन: सीमा

कहानी: प्रभात, जनवरी 2020
यह किताब क्रिएटिव कॉमन्स के Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) लाइसेंस के अन्तर्गत है जिसका पूरा विवरण https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/ पर उपलब्ध है।

इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक के ज़रिए लेखक से अवश्य सम्पर्क करें।

© चित्र: नीलेश गहलोत, जनवरी 2020

यह कहानी *दो भाएली* नाम से बाल विज्ञान पत्रिका *चकमक* में प्रकाशित हुई है।

संस्करण: जनवरी 2020 / 3000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रण: जून 2021 / 3000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रण: अप्रैल 2023 / 3000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रण: जून 2024 / 3000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 220 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-87926-41-7
मूल्य: ₹ 55.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72-73 www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

कहानी में आए माड़ भाषा के शब्द:

भाएली – दोस्त
झिट्टियाँ – उलझे हुए झाड़
गढ़ार – कच्चा रास्ता
मौजी – झूला झूलना
हुमचती – हिचकोले खाती हुई

प्रभात

राजस्थान के करौली ज़िले के रायसना में जन्म। शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र कार्य। बच्चों के लिए गीत, कहानी, कविता, नाटक की 25 किताबें प्रकाशित। बज्जिका, छत्तीसगढ़ी, बैगा, अवधी, कुड़ुक, धावड़ी, भीली, बघेली आदि लोक भाषाओं में बच्चों के लिए लगभग 40 किताबों का सम्पादन-पुनर्लेखन। युवा कविता समय सम्मान, 2012; सृजनात्मक साहित्य पुरस्कार, 2010 और बिग लिटिल बुक अवार्ड, 2019।

नीलेश गहलोत

फाइन आर्ट्स में स्नातक हैं और रियाज़ एकेडमी, भोपाल से इलस्ट्रेशन का कोर्स किया है। बचपन से ही चित्रकला में रुचि है। पिछले 5-6 सालों से बच्चों की किताबों व पत्रिकाओं के लिए चित्र बना रहे हैं।

चिड़िया और चुहिया ऐसी भाएली थीं जिनमें ज़्यादा पटती नहीं थी, पर एक-दूसरे के बिना रह भी नहीं पाती थीं। ऐसा क्या है जो दोनों की दोस्ती बनाए हुए है...

एकलव्य

parag

मूल्य: ₹ 55.00

9 789387 926417